विद्या धन सभी धनों में उत्तम है

कु० गर्विता
कक्षा ९

अखिल सृष्टि में मनुष्य ईश्वर की अद्वितीय व श्रेष्ठ रचना है और मनुष्य की महत्ता उसकी विद्वता में हैं। मनुष्य सुन्दर हो, यौवन सम्पन्न हो,उच्च कुल में उत्पन्न हुआ हो, किन्तु यदि उसके पास विद्या नहीं तो उसकी कोई शोभा नहीं। जैसे पुष्प की शोभा सुगन्ध से होती है , उसी प्रकार मनुष्य की शोभा उसकी विद्वता से है। कहा भी है --

रूप यौवनसम्पन्नः विशालकुल सम्भवाः।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

विद्या का अर्थ है -ज्ञान,शिक्षा, जिस साधन द्वारा मनुष्य कुछ जानता है, सीखता है, उसे विद्या कहते हैं,। " वेत्ति अनया इति विद्या।" वस्तु विशेष के गुणावगुणों की पूरी जानकारी विद्या से ही प्राप्त होती है। विद्याएँ अनेक हैं। जिसके द्वारा मनुष्य को औषधियों के गुण, दोष व शरीर पर उनके प्रभाव का ज्ञान होता है, उसे भूगोल विद्या कहते हैं। जिससे विविध नक्षत्रों व तारा-गणों का ज्ञान होता है, उसे नक्षत्र विद्या या ज्योतिष विद्या कहते हैं। धर्म व कर्तव्य संबंधी विद्या वेद विद्या हुई। मन को आनन्द देने के साथ ही शिक्षा देने वाली विद्या साहित्य हुई। इसी प्रकार भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, अनेक शिल्प आदि भी शास्त्र या विद्याएँ हैं। ये विद्या के विविध रूप हुए। उक्त सभी विद्याएँ एक ही व्यक्ति नहीं जान सकता, किन्तु जो इन विविध विधाओं में से किसी एक,दो या चार को भी जानता है, वह विद्वान होता है।

विद्या के अनेक गुण है। पर उसका सर्व प्रमुख गुण है - नम्रता को देना तथा योग्यता विस्तार करना। उसके साथ अन्य गुण क्रमानुसार स्वतः आते हैं। देखिए -

विद्या देती विनय को, विनय पात्रता मित्त।
पात्रत्वै धन,धनधरम, धरम बढ़ावै सुख नित्त ॥

अर्थात विद्या से मनुष्य में नम्रता आती है। नम्रता से योग्यता आती हैं। योग्यता से मनुष्य धन कमाता है। धन से वह धर्म या कर्तव्य का आचरण करता है और धर्म के आचरण से सुख की प्राप्ति होती है।

विद्या का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य का रूप, धन,यश,सुख एवं सम्मान विद्या में निहित है। विद्वान मनुष्य ही समाज में उच्च स्थान एवं सुख प्राप्त करता है। राजा का मान अपने ही देश में होता है , पर विद्वान देश विदेश सर्वत्र पूजा जाता है -

" स्वदेशे पूज्यते राजा,विद्वान सर्वत्र पूज्यते।"

विद्या ऐसा धन है ,जिसे चोर नहीं चुरा सकते, राजा नहीं छीन सकता, भाई नहीं बॉट सकते और जो व्यय करने पर बढ़ता है , घटने का प्रश्न ही नहीं उठता। रूपया-पैसा अन्न आदि तो ऐसे पदार्थ हैं जो खर्चने पर घटते हैं, किन्तु विद्या-धन की यह विशेषता है कि यह खर्च करने पर बढ़ता है। कहा भी है --

सरस्वती के भंडार की बड़ी अनुपम बात।
ज्यों-ज्यों खरचै त्यौं बढ़ै बिन खरचै घटिजात।

विद्या प्राप्त करने के लिए सुख का त्याग करना पड़ता है। तभी तो यह कहा गया है -

सुखार्थी चेत् त्यजेत् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम।
सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम् ॥

विद्वान सर्वत्र यश प्राप्त करता है , सम्मान पाता है, पूजित होता है , इसके विपरीत अविद्वान को कोई नहीं पूछता। यदि कोई मूर्ख सुन्दर वस्त्र पहनकर भी विद्वानों की सभा में पहुँच जाए तो उसका आदर नहीं होता, क्योंकि उसमें विद्या नहीं। देखिएः-

पुस्तकेषु च नाधीतं,नाधीतं गुरू सन्निधौ।
न शोभते सभा मध्ये,हंस मध्ये वको यथा ॥

अर्थात जिसने पुस्तकों का अध्ययन नहीं किया और न ही गुरू से अध्ययन किया, वह विद्वानों की सभा में उसी प्रकार शोभा नहीं देता है ,जैसे कि हंसों के मध्य बगुला शोभा नहीं होता।

जीवन में सफलता पाने के लिए सबसे प्रमुख धन विद्या धन है। जिस व्यक्ति के पास विद्या धन होता है वहीं मनुष्य कर्तव्य-मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं का सामना कर पाता है। उसी में दृढ़ इच्छा शक्ति और आत्म-विश्वास की भावना होती है। ज्ञान,विज्ञान,कला-कौशल, व्यापार राजनीति,नौकरी आदि सभी क्षेत्रों में एसे ही लोग आगे पढ़ पाते हैं। संसार में धन,मान व गौरव की प्राप्ति एक विद्या धनी ही कर सकता है। सफलता रूपी मोती उसी के हाथ लगते हैं जिसने विद्या रूपी धन को प्राप्त किया है और जो कर्म रूपी समुद्र में डुबकी लगाते हैं। इस पर कबीर जी ने कहा है --

जिन ढूढाँ तिन पाइयाँ गहरे पानी पैढ।
मैं बावरी बूड़नडरी रही किनारे बैढ़ ॥

भारत में विद्या का प्रसार व प्रचार स्वतन्त्रता के बाद काफी तेजी से बढ़ा परंतु फिर भी भारत में 70% जनता निरक्षर है ,इसके लिए आवश्यकता है लोगों को विद्या का महत्व समझाने की। अशिक्षा के महारोग को जड़ से निकालकर ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। इसी विचार के साथ जनता को साक्षर बनाने के प्रयास आरम्भ हुए।

आज देश का लगभग 60 प्रतिशत प्रौढ़ वर्ग अनपढ़ है। इसलिए वह मानसिक दृष्टि से मन्द है, सामाजिक रूप से पिछड़ा है ,धार्मिक रूप से अंध-विश्वासी है और राजनीतिक रूप से वोट के महत्व से अनभिज्ञ है। शोषण का शिकार है। नीति कहती है पेड़ को फलता-फूलता देखना चाहते हो तो उसे जड़ से सींचो। यदि आग लगी है तो उसे फैलने से रोको। इस नीति के अनुसार देश की आजाद सरकार ने प्राथमिक शिक्षा पर जोर दिया ताकि नई पीढ़ी तो शिक्षित बने। प्राइमरी और हाईस्कूलों का देश में जाल बिछ गया तो राष्ट्रीय सरकार का ध्यान उन अनपढ़ लोगों की ओर गया जिनकी आयु प्राथमिक स्कूलों में भरती होने के योग्य न थी या वे दिन में कमाई करने के कारण पाठशाला जा नहीं सकते थे। राष्ट्र की उन्नति और प्रगति में इस वर्ग का विशेष हाथ रहता है।

इसलिए मनुष्य को इस अमूल्य विद्या-धन को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए। विद्या गुरूजनों की सेवा से, अत्यधिक धन से या एक विद्या देकर बदले में दूसरी विद्या देने से मिलती है, एंव विद्या

प्राप्ति के लिए नम्रता व साधना आवश्यक गुण है । विद्या कहीं से भी मिलती हो, उसे अवश्य ग्रहण करना चाहिए । एक नीतिकार ने कहा है --

उत्तम विद्या लीजिए, यदपि नीच पै होय ।
परयो अपावन ठौर पै, कंचन तजत न कोय ।।

मनुष्य के पास यदि सद् विद्या है तो वह कहीं भी निरादृत नहीं हो सकता और न भूखा ही मर सकता है । अतः हमें मान, प्रतिष्ठा, यश और लक्ष्मी देने वाली विद्या की आराधना में निरन्तर तत्पर रहना चाहिए ।